उत्तराम्नाय

श्री-ज्योतिर्मठः

एक परिचय

नारायणसमारम्भां
शंकराचार्यमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां
वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

वर्तमान शंकराचार्य

पूज्यपाद ज्योतिष्पीठाधीश्वर (एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर)
जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

उत्तराम्नाय श्री-ज्योतिर्मठः एक परिचय

सत्य सनातनधर्म

हम सभी में से प्रत्येक के मन में स्वयं को सुरक्षित रखते हुये गरिमापूर्ण, स्वस्थ, संतुष्ट, सुखमय जीवन जीने की इच्छा रहती है जिसके लिये हमारे और आपके जीवन का सारा कार्य व्यवहार है।

परमपिता परमात्मा की कृपा और उपदेश से हमारे पूर्वजों ने यह जान लिया था कि धर्माचरण ही इन सबसे समन्वित जीवन दे सकता है। इसीलिए कहा- **'धर्मो रक्षति रक्षितः'**। **'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'** आदि। वे सदा से ही धर्म का आचरण करते रहे हैं इसी से हमारे धर्म का नाम सनातन धर्म है। यह सदा से रहा है और सदा ही रहने वाला है।

आद्य शंकराचार्य

सत्य सनातन धर्म को सदा जीवन्त बनाये रखने के लिये प्रभु का समय-समय पर अवतार होता आया है। ऐसा ही एक शिवावतार तब हुआ जब देश में बौद्ध व्यवहार बढ़ गया और वेद-शास्त्रों के प्रति आमलोगों में अनास्था उत्पन्न की जाने लगी। तब सनातनधर्म की पुनर्स्थापना के लिये आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले स्वयं भगवान् श्रीशंकर केरल प्रदेश के कालटी नामक गाँव में पिता शिवगुरु और माता आर्याम्बा के घर शंकर नाम से अवतरित हुये।

आठ वर्ष में समस्त वेदों के ज्ञाता शंकर ने संन्यास धारण कर बारह वर्ष की अवस्था तक सभी शास्त्रों का ज्ञान पाया और सोलह वर्ष की अवस्था तक उपनिषदों, भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्रों पर शांकर भाष्य लिख दिया। पूरे देश की पदयात्रा की। शास्त्रार्थ के माध्यम से सनातन सिद्धान्तों के विरोधी बहत्तर मतों को परास्त किया और भविष्य में भी सनातनधर्म का प्रचार होता रहे इस आशय से चारों वेदों को आधार बनाकर देश की चार दिशाओं में चार आम्नाय मठों की स्थापना कर उनकी चार पीठों पर अपने चार सुयोग्य शिष्यों को अभिषिक्त किया और अपने अनुयायियों को उन्हें शंकराचार्य ही समझने तथा तदनुरूप व्यवहार करने को कहा। तब से चारों पीठों पर चार शंकराचार्य अपने-अपने निर्धारित क्षेत्राधिकार में सनातनधर्म का संरक्षण करते आ रहे हैं। उन्हीं चारों मठों में से उत्तर दिशा अथर्ववेद का मठ है ज्योतिर्मठ।

ज्योतिर्मठ नाम का तात्पर्य

ज्युतृ दीप्तौ अथवा द्युत दीप्तौ धातु से क्रमशः इसि, इसिन् प्रत्यय करने पर ज्योतिः शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ 'ज्योतते इति ज्योतिः' अर्थात् प्रकाशक होता है। प्रकाशक होने से दृष्टि, दीप, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, नक्षत्र यहां तक कि श्रीविष्णु को भी ज्योति शब्द कहा गया है। तात्पर्य यह कि सभी प्रकाशक पदार्थ 'ज्योति' कहलाते हैं। गहरे में जाने पर ज्योति शब्द का अर्थ उसमें पहुँच जाता है जो सबका प्रकाशक है। अर्थात् सर्वावभासक चैतन्य, स्वयंप्रकाश आत्मा। भगवान् आद्य शंकराचार्यजी ने ज्योतिश्चरणाभिधानात् ब्रह्मसूत्र में अधिकरण के अन्त में 'अतः परमेव ब्रह्म ज्योतिः शब्दमिति सिद्धम्' कहकर ज्योतिः शब्द का अर्थ परब्रह्म किया है। व्यवहार में भी हम 'दीपो ज्योतिः परब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दन। दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोस्तु ते' कहकर दीप की ज्योति को प्रणाम करते हैं।

अतः भगवान् शंकराचार्यजी ने उत्तराम्नाय को ज्योतिर्मठ संज्ञा देकर इस मठ को उत्तमाधिकारी को ब्रह्मज्ञान कराने वाला, मध्यमाधिकारी को भगवत्प्राप्ति कराने वाला और सर्वसामान्य को धर्मज्ञान के द्वारा पाप से बचाने वाला संकेतित किया है।

ज्योतिर्मठाम्नाय

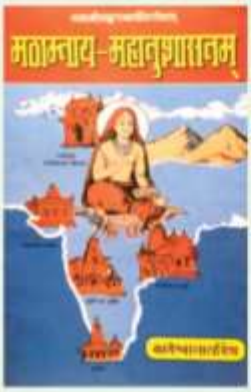

आद्य शंकराचार्यजी ने चार पीठों की स्थापना कर मठों का अनुशासन सुनिश्चित किया। 'मठाम्नाय महानुशासनम्' के अनुसार उत्तराम्नाय ज्योतिर्मठ का क्षेत्र बदरिकाश्रम, सम्प्रदाय आनन्दवार, संन्यासी गिरि-पर्वत-सागर, देवता (बदरी) नारायण, देवी पूर्णागिरि, आचार्य तोटकाचार्य, तीर्थ अलकनन्दा, ब्रह्मचारी आनन्द, वेद अथर्ववेद, महावाक्य अयमात्मा ब्रह्म, गोत्र भृगु, क्षेत्राधिकार कुरु-काम्बोज-काश्मीर-पंजाब-सिन्ध सहित समस्त उत्तर प्रदेश है।

ज्योतिर्मठ की ज्योति हैं परमाराध्य

ऐसा यह ज्योतिर्मठ भारतभूमि के मुकुट हिमालय का मुकुटमणि होकर सुशोभित है और उस मणि की प्रभा के रूप में विद्यमान हैं वर्तमान ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य परमाराध्यचरण स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज, जो मठाम्नाय महानुशासन में शंकराचार्य पद के लिये वर्णित योग्यताओं- **'शुचिर्जितेन्द्रियो वेदवेदांगादि विशारदः। योगज्ञः सर्वशास्त्राणां स मदास्थानमाप्नुयात्'** के धारक हैं और जिन्होंने विगत अड़तालीस वर्षों से ज्योतिर्मठ की ज्योति को निरन्तर ज्योतित किया है।

स्वर्ण ज्योति महामहोत्सव

पूज्यपाद महाराजश्री के ज्योतिष्पीठाधिरोहण के आगामी पचासवें स्वर्णजयन्ती वर्ष का उत्सव अभी से उनके शिष्य-प्रशिष्य 'स्वर्ण ज्योति महामहोत्सव' के रूप में मना रहे हैं और इसी माध्यम से धराधाम के हर कोने में ज्योतिर्मठ की ज्योतित ज्योति को पहुंचा रहे हैं। महामहोत्सव के अन्तर्गत अनेक स्थानों पर ज्योतिर्मठ की ज्योति पहुँच रही है। कार्यक्रम में ढाई हजार विशिष्ट जनों का स्वर्ण ज्योति सम्मान भी संकल्पित है।

ज्योतिर्मठ के प्रथम आचार्य

ज्योतिर्मठ के प्रथम आचार्य तोटकाचार्य जी थे जो भगवान् शंकराचार्य जी के चार प्रमुख शिष्यों में से एक थे। गिरि नाम के संन्यासी तोटकाचार्य के रूप में इसलिए प्रसिद्ध हुये क्योंकि गुरुसेवा में लगे इनके बारे में सहपाठियों के मन में जब यह भ्रान्ति आ गई कि इन्हें शास्त्र ज्ञान नहीं तब इन्होंने सहसा तोटक छन्द में गुरु की स्तुति की। इनके द्वारा रचित श्रुतिसारसमुद्धरणम् ग्रन्थ और केरल के त्रिशूर में स्थापित विशाल मठ इनके शास्त्र और व्यवहारज्ञान के आज भी निदर्शक हैं।

दीर्घजीवी आचार्य परम्परा

ज्योतिर्मठ भव्यताओं के साथ दिव्यताओं से भी भरा है। यहां के प्रथम आचार्य तोटकाचार्य जी से लेकर इक्कीस दीर्घजीवी आचार्यों की परम्परा का श्रवण आज भी किया जाता है जिनके नित्य-निरन्तर स्मरण से योगसिद्धि की प्राप्ति कही गई है।

तोटको विजयः कृष्णः कुमारो गरुडः शुकः । विन्ध्यो विशालो बकुलो वामनः सुन्दरोऽरुणः ॥
श्रीनिवासस्तथाऽऽनन्दो विद्यानन्दः शिवो गिरिः । विद्याधरो गुणानन्दो नारायण उमापतिः ॥
एते ज्योतिर्मठाधीशा आचार्याश्चिरजीविनः । य एतान् संस्मरेन्नित्यं योगसिद्धिं स विन्दति॥

मध्यकालीन आचार्य परम्परा

इक्कीस चिरजीवी आचार्यों के बाद इक्कीस और आचार्यों का विवरण मिलता है जिन्होंने ज्योतिर्मठ की ज्योति से दिग्दिगन्त को आलोकित किया । उनके योगपट्ट इस प्रकार हैं -

बालकृष्णो हरिब्रह्म हरिस्मरण एव च । वृन्दावनो ह्यनन्तश्च भवो कृष्णो हरिस्तथा ॥
ब्रह्म देवो रघुः पूर्णः कृष्णदेवो शिवस्तथा । बालो नारायणोपेन्द्रो हरिश्चन्द्रस्सदासुखः ॥
केशव-नारायणौ चैव रामकृष्णस्तथैव च ॥

दर्शनीय-स्थल

ज्योतिर्मठ आज जोशीमठ के रूप में जाना जाता है । जोशीमठ अब पूरा एक कस्बा और तहसील मुख्यालय है जिनमें अनेक दर्शनीय स्थल हैं । इनके दर्शन अवश्य करें- आद्य शंकराचार्य गुफा। कल्पवृक्ष। ज्योतिरीश्वर महादेव जी। श्रीपूर्णागिरि देवी जी । ब्रह्मलीन स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी एवं ब्रह्मलीन स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी की गद्दी । श्री लक्ष्मीनारायण जी ।
इनके अतिरिक्त अन्य धर्मस्थान भी परिक्षेत्र में विद्यमान हैं।

रामकृष्णाचार्यजी के बाद प्राकृतिक परिस्थितिवश ज्योतिर्मठ को १६५ वर्षों तक गुजरात के धोलका से भी आचार्यों ने संचालित किया और परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखा। उन नौ आचार्यों के नाम ये हैं-

श्रीटोकरा(तोटका)नन्द, पुरुषोत्तमानन्द, कैलाशानन्द, विश्वेश्वरानन्द, अच्युतानन्द, राजराजेश्वरानन्द, मधुसूदनानन्द, विजयानन्द और अद्वैतानन्दजी ।

अद्वैतानन्द जी के बाद यह परम्परा पूज्यपाद ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज में विलीन होकर पुनः अपने मूल स्वरूप में स्थित हो गई।

ज्योतिष्पीठाधीश्वरजी की गद्दी 'ज्योतिष्पीठ'

चतुष्पिट योगिनी दर्शन

नवग्रह दर्शन

तोटकाचार्य गुफा

श्रीमाता राजराजेश्वरी

श्री संकर्षण

श्री भविष्य केदार

ज्योतिर्मठ की आराध्या 'श्री राजराजेश्वरी'

ज्योतिर्मठ का वर्तमान स्वरूप

ब्रह्मलीन स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज

विक्रमी १९९८ तदनुसार ईसवी सन् १९४१ में तत्कालीन भारत की प्रतिनिधि सनातनधर्म संस्था 'भारत धर्म महामण्डल, काशी' के अनुरोध पर अन्य तीनों पीठों के शंकराचार्यों ने ज्योतिष्पीठ/ज्योतिर्मठ को मूल स्थान पर पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से मठस्थान पर महामण्डल से मठ निर्माण करवाकर महान् विद्वान् संन्यासी पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वतीजी महाराज को ज्योतिष्पीठ पर अभिषिक्त कराया। पूज्यपाद महाराजजी जिन्हें 'गुरुदेव' के नाम से जाना गया, बारह वर्ष ज्योतिष्पीठाधीश्वर के रूप में विराजमान रहे।

ब्रह्मलीन स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज

चूंकि पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वतीजी महाराज ने अपने जीवनकाल में अपना कोई उत्तराधिकारी घोषित नहीं किया था और उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् खुले तथाकथित इच्छापत्र में उल्लिखित नामों के अयोग्य पाये जाने पर तीनों शंकराचार्यों, भारत धर्म महामण्डल एवं काशी विद्वत्परिषद् ने चल ग्रन्थालय के रूप में प्रसिद्ध परमवीतराग स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज को ज्योतिष्पीठ पर अभिषिक्त किया। वे बीस वर्षों तक ज्योतिष्पीठाधीश्वर के रूप में विराजे और सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

श्री वासुदेव

कल्पवृक्ष

त्रिमुण्ड्या वीर

ज्योति(दण्ड)धारा

मूल ज्योतिर्मठ

श्रीलक्ष्मी नारायण जी

श्री नृसिंह मन्दिर